International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.123-125

भगवान अटलानी की कहानियों में आधुनिक युग–बोध

डॉ. बाबूलाल बैरवा*

प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी कहानियों में युगबोध समसामयिक परिस्थितियों के ज्ञान की अवधारणा है। कथाकार युगबोध का सीधा सम्बंध सृजन प्रक्रिया से मानते हैं। वस्तु चयन और शिल्पगत नवीनता के माध्यम से साहित्य में युगबोधों की अभिव्यक्ति की जाती है। अपने समय और समाज के युग के अनुरूप संस्कार करने वाली जीवन दृष्टि आधुनिकता कहलाती है। समसामयिक जीवन मूल्यों को ज्यादा तरजीह देकर पुरातन एवं बाह्य जीवन मूल्यों का तिरस्कार आधुनिकता करती है। आधुनिक युगबोध को अपनी कहानियों में महत्व देते हुए समकालीन हिन्दी की धारा को समद्ध करने वाले राजस्थान के कहानीकारों भगवान अटलानी का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है। आधुनिक भावबोध से युक्त, अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति करने वाले,गम्भीर एवं अर्थपूर्ण कहानी लिखने वाले भगवान अटलानी श्रेष्ठ समकालीन कथाकार हैं। पाश्चात्य आधुनिकतावादी दर्शन के प्रभाव से भारतीय नगरीय जीवन में व्युत्पन्न आधुनिक प्रभाव और तत्कालीन आधुनिक युगबोधों को भगवान अटलानी ने अपनी कहानियों का केन्द्र बिन्दु बनाया।

आधुनिकता को तत्कालीन रूप में प्रस्तावित करने में मनोविश्लेषणवादी,मार्क्सवादी और अस्तित्वादी विचारधाराओं नें मानव जाति के समक्ष अनेक प्रश्न खड़ेकर दिए। वैज्ञानिक प्रगति के परिणाम स्वरूप मनुष्य बौद्धिक विश्लेषण करते हुए वस्तु सत्य पर बल देने लगा। मनुष्य ने यह तकनीक जब जीवन और समाज में लागू कर दी तब मनुष्य के जीवन की रागात्मकता और नैतिकता को गहरी चोट पहुँची। आद्यौगिक सभ्यता के विकास ने मनुष्य का मूल्य अर्थोपाजन की परिपाटी पर ऑका। इसमें असफल व्यक्ति संत्रास,पीड़ा, टूटन और निराशा का शिकार होने लगा। नामवर सिंह के अनुसार – ''आधुनिकता एक सिर्फ खाली शब्द नहीं है, आसपास की हर नीज को ऐसे अंदांज से देखने और पहचानने की प्रक्रिया है,जो हम से पहले किसी पीढ़ी के पास नहीं थी।'' भगवान अटलानी के कथा संसार में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें उपलब्ध होता है।

भगवान अटलानी ने आधुनिक युगबोधों के अन्तर्गत

- **विवाह का विरोध,**
- **अकेलापन,**
- **अजनबीपन,**
- **पारिवारिक सम्बंधों में दरार**
- **निराशा एवं कुण्ठा**
- **राजनीति पर व्यंग्य**

जैसी मानसिक स्थितियों को निरूपित किया है। भगवान अटलानी की कहानियों में ऐसे चरित्र विद्यमान हैं जो विवाह संस्था का विरोध करते हैं। स्त्री और पुरूष परस्पर यौन सम्बंध रखते हैं,बच्चे भी पैदा करते हैं और एक ही छत के नीचे रहते भी हैं। 'इच्छा' नामक कहानी संग्रह में आधुनिक युगबोध विभिन्न परिवेशों, पृष्ठभूमि व विषयवस्तुओं से प्रसूत व जीवन की धूप छांव के रंगों से जीवन्त, इनके कथानक अन्तर्मन की गहराइयों को छूकर चेतना को झकझोरते है और पाठक पर गहरा असर छोड़ जाते हैं। दलित लोगों की दयनीय दशा एवं पीड़ा के साथ साथ उनमें रहे आक्रोश का भाव इनकी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देता है।

* सहायक आचार्य, हिन्दी,स्व.पं.न.कि.श.राजकीय महाविद्यालय,दौसा, राजस्थान।

भगवान अटलानी की कहानियों में एक नए युग के विषयों को पकड़ने और कथा के रूप में पिरोने की चामत्कारिक क्षमता है। भाषा में विस्तार के साथ साथ प्रवाह भी विद्यमान है। कथानक प्रस्तुत करने की उनकी अलहदी व अन्दर तक उतर जाने वाली अनूठी शैली है। जिन चरित्रों की अटलानी अपनी कहानियों में सृष्टि करते है,वे सब वायवीय,मायावी एवं काल्पनिक न होकर जीवन से जुड़े हुए हैं। कहानीकार अटलानी व्यक्ति के मन के घनघोर अकेलेपन को बड़ी यथार्थता के साथ अपनी कहानियों में चित्रित करते हैं। ये चरित्र चाहे घर में हो या भीड़ में,पार्क में हो या आफिस में इस अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए छटपटातें हैं। यह अकेलापन कहीं दाम्पत्य जीवन के टूटने से उपजा है तो कहीं पात्र की अन्तर्मुखी प्रकृति के कारण।

समकालीन कथाकार के सामने तो अनेकानेक युगबोधी समस्याएँ हैं जिनको वह भोग रहा है और देख भी रहा है और जिनका चित्रण अपने जीवनानुभव के आधार पर कर रहा है। ऐसे समकालीन राजस्थानी कथाकारों में भगवान अटलानी का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जा सकता है। भगवान अटलानी का लेखन उन्हें समकालीन यथार्थवादी कहानी की परम्परा में एक विशिष्ट स्थान पर खड़ा करता है। भगवान अटलानी ने ग्राम, अंचल और नगर की उन सच्चाइयों को साक्षात करवाया है जो कथा साहित्य में अब तक अनछुई थी। भगवान अटलानी चुनौतियों से जूझने वाले लेखक हैं। उन्होंने न केवल समाज के सच को उजागर किया है। बिना किसी लाग–लपेट के शासन की उन विसंगतियों, कमजोरियों और चालाकियों की नब्ज़ पर हाथ रखते हैं, जिनके बारे में सोचना भी आज के लेखक के लिए दूभर हो गया है। सामाजिक, राजनीतिक, एवं अन्य क्षेत्रों मे ं पनपी विकृतियों को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित करके समाज को झकझोरने का प्रयास किया है।

विकासोन्मुखी समाज में नए मूल्यों की स्थापना हो रही है और प्राचीन जीवन मूल्यों से मोह भंग हो रहा है। इसलिए नवीन और प्राचीन मूल्यों में समन्वय न होने के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। दाम्पत्य जीवन में अर्थाभाव के कारण जहाँ समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं वहीं पति–पत्नी के जीवन मे व्याप्त निराशा एवं प्राचीन मूल्यों के ह्रास, असंतुलित तथा अतृप्त यौन सम्बन्धों, काम–वासना व शंकालू प्रवृति के कारण दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट, टूटन, घुटन, निराशा व्याप्त होती जा रही है, जो अनेक बार दाम्पत्य जीवन में सम्बन्ध विच्छेद का मुख्य कारण बनती है। भगवान अटलानी ने अपने कहानी संग्रहों में दाम्पत्य जीवन से जुड़े युगबोध को बेबाक ढ़ग से चित्रित किया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जिस प्रकार दर्पण में हमारा प्रतिबिम्ब ज्यों का त्यों दिखाई देता है, ठीक इसी तरह साहित्य भी अपने समाज का यथार्थ प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। विवेच्य कथाकार की कहानियों में तत्कालीन समाज का चित्र अपने यथार्थ रूप में उपस्थित होता है। तत्कालीन समाज की समस्याओं, विकृतियों, विड़म्बनाओं को भगवान अटलानी ने अपनी कहानियों के पात्रों द्वारा युगानरूप चित्रण कर अपनी युगबोधी दृष्टि का परिचय दिया है। तत्कालीन जनजीवन की सभी दशाओं को अटलानी ने बड़ी बखूबी से चित्रण किया है। नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं,व्यथाओं एवं पुरूष मानसिकता, आदि की परदा,मूर्ख,अपराध–मुक्ति एवं बोझ आदि कहानियों में बड़ी बेबाकी प्रस्तुत की है। इसके अलावा दलित, शोषित जनों की व्यथा को भी 'इच्छा' नामक कहानी संग्रह में वाणी दी है।

समाज की व्यवस्था को चलाने के लिए अर्थ इसके केन्द्र में कार्य करता है। यद्यपि वैदिक काल में अर्थ का महत्त्व आधुनिक काल के समान नहीं होता था। लेकिन वर्तमान में अर्थ की सत्ता ने हमारी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सत्ताओं पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया है। वर्तमान व्यक्ति स्व तक सीमित हो अर्थजीवी बन गया है। पारिवारिक संबंध, सामाजिक संबंधों एवं अन्य संबंधों को अर्थ की महत्ता ने विकृत करना शुरू कर दिया है। इन सभी विकृतियों को भगवान अटलानी ने अपनी कहानियों द्वारा बड़ी बखूबी से चित्रित किया है।

'इच्छा ' नामककहानी संग्रह में भगवान अटलानी ने अर्थ मानसिकता से उत्पन्न विभिन्न पारिवारिक विसंगतियों को वाणी देने के साथ–साथ अर्थ के सामाजिक कुप्रभावों को भी युगानुरूप वाणी दी है। साथ–साथ अर्थ महत्वाकांक्षा से उत्पन्न पति–पत्नी, पिता–पुत्र, माता–पुत्र आदि में उत्पन्न विकृतियों का यथार्थ चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त जन–जीवन में व्याप्त निर्धनता, भूखमरी, बेरोजगारी आदि सामाजिक विड़म्बनाओं को भी

प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से वाणी दी है। अर्थ या पूंजीवादी सभ्यता का भी भगवान अटलानी ने तत्कालीन वातावरण के अनुरूप विवेचन–विश्लेषण प्रस्तुत कर अपनी युगबोधी दृष्टि का सफल परिचय दिया है। इस तरह भगवान अटलानी ने अर्थ से संबंधित विविध आयामों को चित्रित करने के साथ–साथ पूँजीवादी सभ्यता के खतरों को दिखाकर उनका निराकरण भी प्रस्तुत किया है। अर्थ व्यक्ति एवं सामाजिक जीवन के परिचालन के लिए अनिवार्य घटक है क्योंकि सामाजिक व्यवहार, वस्तुओं के आदान–प्रदान आदि का मूलाधार अर्थ ही होता है। अर्थाभाव और अर्थाधिक्य दोनों ही विकृतियों को जन्म देते हैं। लेखक भगवान अटलानी ने अपनी कहानियों में आर्थिक पहलू को भी महत्त्व दिया है।

भगवान अटलानी ने अर्थाभाव और अर्थाधिक्य से उत्पन्न भिन्न–भिन्न युगीन समस्याओं का चित्रण किया है। लेखक का जीवन अन्य लेखकों की भाँति अभावग्रस्त रहा है। इसलिए उन्होंने अभावग्रस्त लोगों की पीड़ा को समझा है और पीड़ा का चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में किया है। वर्तमान युग पूँजीवादी व्यवस्था का युग है क्योंकि मिल–मालिकों और जमींदारो का अर्थ पर एकाधिकार है। वे अपने यहाँ काम करने वाले श्रमिको एवं किसानों का शोषण करते हैं। अटलानी ने निर्धनता को अभिशाप माना है। धन का अभाव अनेक समस्याओं को जन्म देता है। निर्धनता के कारण ही माता–पिता अपने बच्चों का लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं कर पाते। कभी–कभी तो उन्हें विवश होकर अपने बच्चों को अनाथाश्रम में भेजना पड़ता है। भगवान अटलानी ने निर्धनता से पीड़ित युवक–युवतियों की दयनीय स्थिति का चित्रण अत्यन्त मार्मिक ढंग से किया है। यहाँ तक कि निर्धनता के कारण युवतियों को अपनी इज्जत दाँव पर लगानी पड़ती है। लेखक ने आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न भिन्न–भिन्न विकृतियों का चित्रण अत्यन्त सहजता के साथ किया है। वर्तमान समाज में व्याप्त बेरोजगारी अत्यन्त ही जटिल समस्या है। बेरोजगारी के कारण युवकों में निराशा, कुण्ठा, संत्रास व्याप्त हो गया है जिसके कारण या तो वे जीवन संघर्ष से मुँह मोड़ लेते हैं या फिर गलत रास्ते का चयन कर लेते हैं। लेखक ने बेरोजगारी से उत्पन्न विकृतियों का चित्रण युग के धरातल पर करके समाज को सोचने के लिए विवश कर दिया है।

विविधताएं जीवन का अविभाज्य पहलू हैं। क्षण प्रतिक्षण दैहिक व दैविक स्तर पर होने वाले परिवर्तनों के हम सब साक्षी हैं। फिर भी, बहुत कुछ ऐसा ह जो समय,स्थान और व्यक्ति परक भिन्नताओं के बावजूद हमेशा एक जैसा रहता है। सच्चे अर्थों में भगवान अटलानी की कहानियां चारों ओर बिखरे बिंबों के माध्यम से काल का अतिक्रमण करती है। 'इच्छा' नामक कहानी संग्रह की कहानियां पाठक को दृष्टि–संपन्न तो बनाती ही हैं, भावनात्मक और वैचारिक उदात्तता भी प्रदान करती हैं। इनकी कहानियों को पढ़ना एक नए अनुभव संसार से गुजरना है। नवीन पात्र,नवीन घटनाएं और नवीन संवेदनाओं का संसार हिन्दी कथा संसार में अपना विशेष स्थान रखता है। निश्चय ही भगवान अटलानी की साहित्य साधना मानवीय संघर्ष की अपराजित कथा है। सार्वभौम और सार्वकालिक मानव मन की प्रतिश्रुति से उनकी कहानियां चिरकाल तक आनंद निःसृत करती हैं। शैली की दृष्टि से ही नहीं, कथा गठन की दृष्टि से ही नहीं,वैचारिकता की दृष्टि से भी समकालीन कहानिकारों में अटलानी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे उन संवेदनाओं के आधार पर कहानी लेखन करते हैं, जो समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य में पहली बार दिखायी देती हैं।

संदर्भ – सूची

1. भगवान अटलानी – इच्छा,ज्ञान गंगा प्रकाशन,दिल्ली .
2. भगवान अटलानी – इन्द्र धनुष क्षितिज के,सत्साहित्य प्रकाशन,नई दिल्ली.
3. डॉ.किशोर राव सिंह – समकालीन कथाकारों में युगीन परिवेश,रचना प्रकाशन,जयपुर.
4. अजय वर्मा – आज की हिन्दी कहानी,नया ज्ञानोदय प्रकाशन,नई दिल्ली.
5. डॉ. गंगाप्रसाद विमल– समकालीन हिन्दी कहानी का रचना विधान
6. कमलेश्वर – नई कहानी की भूमिका,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली.
7. शरद देवड़ा – सातवें दशक की हिन्दी कहानियां, अपरा प्रकाशन,कलकत्ता.

❖◆❖